ʿकसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई बंधा ।। १९ ।।

ʿसुगममेदं ।

ʿअकसाई बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ।। २० ।।

ʿकुदो ? सजोगाजोगेसु अकसायत्तस्सुवलंभा ।

ʿसिध्दा अबंधा ।। २१ ।।

ʿसिध्द अबन्धक हैं ।। १८ ।।

ʿशंका--<जिस कारण अपगतवेदी जीव सिध्दोंमें भी है अत एव पूर्वोक्त सूत्रमें अपगतवेदकी प्ररूपणासेही सिध्दोंकी भी प्ररूपणा हो जाती है, इसलिये सिध्दोंकी पृथक् प्ररूपण निष्फल क्यों नहीं हो जाती? >

ʿसमाधान--<ऐसा कहनेपर कहते हैं कि सिध्दोंकी पृथक् प्ररूपणा निष्फल नहीं है, क्योंकि, अपगतवेदपनेकी अपेक्षा बन्धक और अबन्धक ये दोनों राशियां ग्रहण की गयीं हैं जिससे सिध्दोंमें भी बन्धक और अबन्धक विषयक सन्देह होने लगता है अत: इसी सन्देहको दूर करनेके लिये 'सिध्द अबन्धक हैं' ऐसी पृथक्प्ररूपणा की गयी है। शेष सूत्रार्थ सुगम हैं।>

ʿकषायमार्गणानुसार क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायी जीव बन्धक हैं ।। १९ ।।

<यह सूत्र सुगम है ।>

ʿअकषायी जीव बन्धक भी हैं और अबन्धक भी है।। २० ।।

<क्योंकि ग्यारहवें गुणस्थानसे लेकर तेरहवें गुणस्थान तकके सयोगी जीवोंमें तथा चौदहवें गुणस्थानवर्ती अयोगी जीवोंमें अकषायपना पाया जाता है।>

ʿसिध्द अबन्धक हैं ।। २१ ।।

----

www.jainworld.com

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʻएदस्स सुत्तारंभस्स कारणं पुव्वं व परूवेदव्वं ⅃

ʻणाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी विभंगणाणी आभिणि-बोहियणाणी सुदणाणी ओधिणाणी मणपज्जवणाणी बंधा ।। २२ ।⅃

ʻसुगममेदं ⅃

ʻकेवलणाणी बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ।। २३ ।⅃

ʻसिध्दा अबंधा ।। २४ ।⅃

ʻएत्थ अबंधा चेवेत्ति एवकारो किण्ण कदो ? ण (१ मु.प्रतौ (ण,) इतिपाठः), सुत्तारंभादो चेव तदुवलध्दीदो । सेसं सुगमं ⅃

ʻसंजमाणुवादेण असंजदा बंधा, संजदासंजदा बंधा ।। २५ ।⅃

ʻसंजदा बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ।। २६ ।⅃

ʻएदाणि दो वि सुत्ताणि (२ भ.व.स. प्रतिषु सुत्ताणि इतिपाठो पारिस।) सुगमाणि ⅃

<इस सूत्रके पृथक् रचे जानेका कारण पहलेके समान प्ररूपित करना चाहिये ।>

ʻज्ञानमार्गणानुसार मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, विभंगज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी और मनःपर्ययज्ञानी बन्धक हैं ।। २२ ।⅃

<यह सूत्र सुगम हैं ।>

ʻकेवलज्ञानी बन्धक है और अबन्धक भी हैं ।। २३ ।⅃

ʻसिध्द अबन्धक हैं ।। २४ ।⅃

ʻशंका-ः<यहां अबन्धक ही हैं ऐसा अन्य विकल्पका निषेधात्मक एव पदका प्रयोग क्यों नहीं किया ?>

ʻसमाधान-ः<नहीं किया, क्योंकि, सूत्रकी पृथक् रचनामात्रसे ही वही अर्थ जान लिया जाता है ।>

<शेष सूत्रार्थ सुगम है ।>

www.jainworld.com

ʿसंयममार्गणानुसार असंयत बंधक हैं और संयतासंयत बंधक है ।। २५ ।ʾ

ʿसंयत बंधक भी हैं अबंधक भी हैं ।। २६ ।ʾ

<ये दोनों सूत्र सुगम हैं ।>

बंधगसंतपरूवणाए लेस्सामग्गणा

ʿणेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा अबंधा ।। २७ ।ʾ

ʿविसएसु दुविहासंजमसरूवेण पवुत्तीए अभावा असंजदा ण होंति सिध्दा । संजदा वि ण होंति, पवुत्तिपुरस्सरं तण्णिरोहाभावा । तदो णोभयसंजोगो वि । सेसं सुगमं ।ʾ

ʿदंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओधिदंसणी बंधा ।। २८ ।ʾ

ʿकेवलदंसणी बंधा वि अत्थि, (१ अ.ब. प्रतिषु अत्थि इति पाठो नास्ति।) अबंधा वि अत्थि ।। २९ ।ʾ

ʿसिध्दा अबंधा ।। ३० ।ʾ

ʿसव्वमेदं सुगमं ।ʾ

ʿलेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिया णीललेस्स्यिा काउलेस्सिया तेउ-लेस्सिया पम्मलेस्सिया सुक्कलेस्सिया बंधा ।। ३१ ।ʾ

ʿसुगममेदं ।ʾ

ʿन संयत, न असंयत, न संयतासंयत ऐसे सिध्द जीव अबंधक हैं ।। २७ ।ʾ

<विषयोंमें दो प्रकारके असंयम अर्थात् इन्द्रियासंयम और प्राणिअसंयमं रूपसे प्रवृत्ति न होनेके कारण सिध्द असंयत नहीं हैं । सिध्द संयत भी नहीं हैं, क्योंकि, प्रवृत्तिपूर्वक उनमें संयमका अभाव है । इस कारण संयम और असंयम इन दोनोंके संयोगसे उत्पन्न संयमासंयमका भी सिध्दोंकेअभाव है । शेष सूत्रार्थ सुगम है।>

ʿदर्शनमार्गणानुसार चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी बन्धक हैं ।। २८ ।ʾ

ʿकेवलदर्शनी बन्धक भी है और अबन्धक भी हैं ।। २९ ।ʾ

ʿसिध्द अबन्धक हैं ।। ३० ।ʾ

<यह अब सूत्रा सुगम हैं ।>

ʿलेश्यामार्गणानुसार कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, तेजो-लेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले और शुक्ललेश्यावाले बन्धक हैं ।।३१।’

<यह सूत्र सुगम है।>

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿअलेस्सिया अबंधा।। ३२ ।’

ʿसिध्दा अबंधा त्ति एत्थ पुधणिद्देसो किण्ण कदो ? ण, अलेस्सिएसु बंधाबंधो-भयभंगाभावेण संदेहाणुप्पत्तीदो । सेसं सुगमं ।’

ʿभवियाणुवादेण अभवसिध्दिया बंधा, भवसिध्दिया बंधा वि अत्थि अबंधा वि अत्थि ।। ३३ ।’

ʿणेव भवसिध्दिया णेव अभवसिध्दिया अबंधा ।। ३४ ।’

ʿसव्वमेदं सुगमं ।’

ʿसम्मत्ताणुवादेण मिच्छादिट्ठी बंधा, सासणसम्मादिट्ठी बंधा, सम्मामिच्छादिट्ठी बंधा ।। ३५ ।’

ʿकुदो ? सयलासवसंजुत्ततादो ।’

ʿसम्मादिट्ठि बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ।। ३६ ।’

ʿलेश्यारहित जीव अबन्धक हैं ।। ३२ ।’

ʿशंका--<’सिध्द अबन्धक हैं’ ऐसा पृथक निर्देश क्यों नहीं किया ?>

ʿसमाधान--<नहीं किया, क्योंकि लेश्यारहित जीवोंमें बन्धक और अबन्धक ऐसे दो विकल्प न होनेसे कोई सन्देह उत्पन्न नहीं होता । अर्थात् अलेश्य अबंधक हैं इतना कहनेमात्रसे ही स्पष्ट हो जाता है कि लेश्यारहित अयोगी जिन भी अबन्धक हैं और सिध्द भी अबन्धक हैं । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।>

ʿभव्यमार्गणानुसार अभव्यसिध्दिक जीव बन्धक हैं, भव्यसिध्दिक जीव बन्धक भी हैं और अबन्धक भी हैं।। ३३।’

ʿन भव्यसिध्दिक न अभव्यसिध्दिक ऐसे सिध्द जीव अबन्धक हैं ।। ३४।’

<यह सब सूत्रार्थ सुगम है ।>

ʻसम्यक्त्वमार्गणानुसार मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं, सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं और सम्यग्मिथ्यादृष्टि बन्धक भी हैं।। ३५।ʼ

ʻक्योंकि, उक्त जीव समस्त कर्मास्त्रवोंसे संयुक्त होते हैं ।ʼ

ʻसम्यग्दृष्टि बन्धक भी हैं और अबन्धक भी हैं ।। ३६।ʼ

बंधगसंतपरूवणाए सण्णिमग्गणा

ʻकुदो ? सासावाणासवेसु सम्मद्दंसणुवलंभा ।ʼ

ʻसिध्दा अबंधा ।। ३७ ।ʼ

ʻसुगममेदं ।ʼ

ʻसण्णियाणुवादेण सण्णी बंधा, असण्णी बंधा ।। ३८ ।ʼ

ʻणेव सण्णी णेव असण्णी बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ।। ३९ ।ʼ

ʻविणट्ठणोइंदियखओवसमादो केवलणाणिणो णो सण्णिणो; तत्थ इंदियावट्ठं-भबलेणाणुप्पबोधुवलंभादो णो असण्णिणो । तदो ते बंधा वि अबंधा वि, बंधाबंध-कारणजोगाजोगाणमुवलंभा।ʼ

ʻसिध्दा अबंधा ।। ४० ।ʼ

ʻसुगममेदं।ʼ

<क्योंकि, चौथेसे तेरहवे गुणस्थान तकके आस्त्रव सहित और चौदहवें गुणस्थानवर्ती आस्त्रव रहित, ऐसे दोनों प्रकारके जीवोमें सम्यग्दर्शन पाया जाता है।>

ʻसिध्द अबन्धक हैं ।। ३७ ।ʼ

<यह सूत्र सुगम है।>

ʻसंज्ञीमार्गणानुसार संज्ञी बन्धक हैं, असंज्ञी बन्धक हैं ।। ३८ ।ʼ

ʻन संज्ञी न असंज्ञी ऐसे केवलज्ञानी जिन बन्धक भी हैं और अबन्धक भी हैं ।। ३९ ।ʼ

<उनका नोइन्द्रियज्ञानावरणकर्मका क्षयोपशम नष्ट हो गया है, इसलिये केवलज्ञानी जीव संज्ञी नहीं है तथा उनके मात्र इन्द्रियोंके अवलम्बनसे ज्ञानकी उत्पत्ति नहीं होती इसलिये वे केवलज्ञ

ानी जीव असंज्ञी नहीं हैं । अत: वे न संज्ञी और न असंज्ञी होकर बन्धक भी हैं और अबन्धक भी है क्योंकि उनकी सयोगी अवस्थामें बन्धका कारण योग पाया जाता है और अयोगी अवस्थामें अबन्धका कारण योगका अभाव रहता है। इस प्रकारके केवलज्ञानी जिन बन्धक भी होते हैं और अबन्धक भी होते हैं ।>

ʿसिध्द अबन्धक हैं ।।४०।⅃

<यह सूत्र सुगम है ।>

<१ प्रतिषु 'केवलणाणी सण्णिणो तत्थ णोइंदिया'--इति पाठः ।>

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿआहाराणुवादेण आहारा बंधा ।।४१ ।⅃

ʿअणाहारा बंधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ।।४२ ।⅃

ʿसिध्दा अबंधा ।।४३।⅃

ʿसुगममेदं ⅃

ʿएसो बंधगसंताहियारो पुव्वमेव किमट्ठं परूविदो ? सति धर्मिणि धर्माश्चिन्त्यन्त इति न्यायात् बंधयाणमत्थित्ते सिध्दे संते पच्छा तेसिं विसेसपरूवणा जुज्जदे । तम्हा संतपरूवणं पुव्वमेव कादव्वमिदि । एवमत्थित्तेण सिध्दाणं बंधयाणमेक्कारसअणियोगद्दारेहि विसेसपरूवणट्ठमुत्तरगंयो अवइण्णो ⅃

ʿएवं बंधगसंतपरूवणा समत्ता⅃

ʿआहारमार्गणानुसार आहारक जीव बन्धक हैं ।।४१ ।⅃

ʿअनाहारक जीव बन्धक भी हैं, और अबन्धक भी हैं ।।४२।⅃

ʿसिध्द अबन्धक हैं ।।४३।⅃

<ये सूत्र सुगम हैं >

ʿशंका--<यह बन्धकसत्त्वाधिकार पहले ही क्यों प्ररूपित किया गया है? >

ʿसमाधान--<धर्मोके सभ्दावमें ही धर्मोका चिन्तन किया जाता है इस न्यायके अनुसार बंधकोंका अस्तित्व सिध्द हो जाने पर पश्चात् उनकी विशेष प्ररूपणा करना योग्य है । इसलिये बन्धकोंकी

सत्प्ररूपणा पहले ही करना चाहिये । इस प्रकार अस्तित्वसे सिध्द हुए बन्धकोंके ग्यारह अनुयोगों द्वारा विशेष प्ररूपणार्थ आगेकी ग्रन्थरचना हुई है ।>

<इस प्रकार बन्धकसत्प्ररूपणा समाप्त हुई ।>

सामित्ताणुगामो

ʻएदेसिं बंधयाणं परूवणट्ठदाए तत्थ इमाणि एक्कारस अणि-योगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति ।।१।।

ʻअण्णध्देसु (१ स.मु.प्रतौ अणध्देसु, अ.ब.स. प्रतिषु अण्णध्देसु इति पाठः) बंधएसु कधमेदेसिं बंधयाणमिदि पच्चक्खणिद्देसो उववज्जदे ? ण, एस दोसो, बंधगविसयबुध्दीए पच्चक्खतमवेक्खिय पच्चक्खणिद्देसुववत्तीदो । संताणि-योगद्दार पुव्वमपरूविय तेण सह बारसअणियोगद्दारेहि बंधगाणं किण्ण परूवणा कीरदे ? ण, बधगत्तेण असिध्दाणं तस्सिध्दिपरूवणाए बंधगपरूवणताणुववत्तीदो। तेसिमेक्कारस-अणियोगद्दारणं णामणिद्देसट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि

ʻएगजीवेण सामित्तं, एगजीवेण कालो, एगजीवेण अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ, दव्वपरूवणाणुगमो, खेत्ताणुगमो, फोसणाणु-गमो, णाणाजीवेहि कालो, अंतरं भागाभागाणुगमो, अप्पाबहुगाणुगमों चेदि ।।२।।

ˊइन बन्धकोंकी प्ररूपणारूप प्रयोजनके होनेपर वहां ये ग्यारह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं ।। १।,।

ˊशंका-ः<अन्य अर्थोमें बन्धकोंके रहने पर इन बन्धकोंका इस प्रकार प्रत्यक्ष निर्देश कैसे बन सकता है ?>

ˊसमाधान-ः<यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, बन्धकविषयक बुध्दीसे प्रत्यक्षपनेकी अपेक्षा करके प्रत्यक्ष निर्देशकी उपपत्ति बन जाती है ।>

ˊशंका-ः<सत् अनुयोगद्वारको पहले ही प्ररूपति न करके उसके साथ बारह अनुयोगद्वारोंसे बन्धकोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं की जाती ?>

ˊसमाधान-ः<नहीं, क्योंकि बन्धकभावसे असिध्द जीवोंको बन्धक सिध्द करनेवाली प्ररूपणाके लिये बन्धकप्ररूपणा नाम देना अनुष्युक्त ठहरता है।>

<उन ग्यारह अनुयोंगद्वारोंके नामनिर्देशके लिये आचार्य अगला सूत्र कहते हैं- >

ˊएक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय द्रव्यप्ररूपणानुगम, क्षेत्रानुगम, स्पर्शनानु-गम, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, अन्तर, भागाभागानुगम और अल्पबहुत्व।।२।,।

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ˊअंतिल्लो 'च' सद्दो समुच्चयत्थो । इदि सद्दो एदेसिं बंधगाणं परूवणाए एत्तियाणि चेव अणियोगद्दाराणि होंति ण वड्डिमाणि त्ति अवहारणट्ठं कदो । एगजीवेण सामित्तं पुव्वमेव किमट्ठं वुच्चदे ? ण उवरिल्लसव्वयाणिओगद्दाराणं (१ मु. प्रतौ सव्वयाणि इति पाठः।) कारणत्तेण सामि-त्ताणियोगद्दारस्स अवट्ठाणादो । कुदो चोद्दसमग्गणट्ठाणं ओदइयादिपंचसु भावेसु को भावो कस्स मग्गणट्ठाणस्स सामिओ णिमित्तं होदि ण होदि त्ति सामित्ताणिओगद्दार परूवेदि, पुणो तेण भावेण उवलक्खियमग्गणाए बंधएसु सेसाणिओगद्दारपवुत्तीदो । सेसाणिओग-द्दारेसु कालो चेव किमट्ठं पुव्वं परूविज्जदि ? ण, कालपरूवणाए विणा अंतरपरूव-णाणुववत्तीदो पुणो अंतरमेव वत्तव्वं, एगजीवसंबंधिणो अण्णस्स अणिओगद्दारस्सा-भावा। णाणाजीवसंबंधीएसु सेसाणिओगद्दारेसु पढमं

णाणाजीवेहि भगविचओ किमट्ठं वुच्चदे ? ण, एदस्स मग्गणट्ठाणपवाहस्स विसेसो अणादिअपज्जवसिदो, एदस्स

<सूत्रके अन्तमें आया हुआ च शब्द समुच्चयार्थक है; और 'इन बन्धकोंकी प्ररूपणामें इतनेमात्र ही अनुयोगद्वार हैं, इनसे अधिक नहीं' ऐसा निश्चय करानेके लिये सूत्रमें 'इति' शब्दका प्रयोग किया गया है।>

ʿशंका--<एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्वका कथन सबसे पूर्वमें ही क्यों किया जाता है ?>

ʿसमाधान--<नहीं, क्योंकि, यह स्वामित्वासम्बन्धी अनुयोगद्वार आगेके समस्त अनुयोगद्वारोंके नहीं, अवस्थित है। इसका कारण यह है कि चौदह मार्गणास्थान औदायिकादि पांच भावोंमेंसे किस भावरूप हैं, किस मार्गणास्थानका स्वामी निमित्त होता है या नहीं होता, यह सब स्वामित्वानुयोगद्वार प्ररूपित करता है पुन: उसी भावसे उपलक्षित मार्गणाकेहोनेपर बन्धकोंमें शेष अनुयोगद्वारोंकी प्रवृत्ति होती है।>

ʿशंका--<शेष अनुयोगद्वारोंमें काल ही पहले क्यों प्ररूपित किया जाता है ?>

ʿसमाधान--<नहीं, क्योंकि, कालकी प्ररूपणाके विना अन्तर प्ररूपणाकी उपपत्ति नहीं बैठती । अत: अन्तर ही कहना चाहिये, क्योंकि, एक जीवसे सम्बन्ध रखनेवाला अन्य कोई अनुयोगद्वार नहीं पाया जाता ।>

ʿशंका-<नाना जीवसम्बन्धी शेष अनुयोगद्वारोंमें पहले नाना जीवोंकी अपेक्षा भंग-विचय ही क्यों कहा जाता है ? >

ʿसमाधान--<नहीं, क्योंकि-इस मार्गणास्थानकेप्रवाहका एक विशेष (भेद) अनादि-अनंत >

सामित्ताणुगमे अणियोगद्दारक्कमणिद्देसो

ʿसादिसपज्जवसिदो त्ति सामण्णेव अवगदे सेसाणिओगद्दाराणं पदणसंभवादो । दव्व-पमाणे अणवगदे खेत्तादिअंणियोगद्दाराणमधिगमोवाओ णत्थि त्ति दव्वाणिओगद्दारस्स पुव्वणिवेसो कदो । वट्टमाणपासपरूवणाए विणा अदीद-वट्टमाणफासपरूवयफोसणाणि-ओगद्दाराधिगमोवाओ णत्थि त्ति खेत्ताणिओगद्दारस्स पुव्वं णिवेसो कदो । मग्गणाण-मत्थिदखेत्ते अवगदे तेसिं दव्वसंखाए च

अवगदाए पच्छा तीदकालफासपरूवणा णाया-गदेत्ति णिवेसिदा । मग्गणकाले अणवगदे तेसिमंतरादिपरूवणा ण घडदि त्ति पुव्वं कालाणिओगद्दारं परूविदं । कालजोणि अन्तरमिदि कट्टु अन्तरं तदणंतरे परूविदं । पुरदो वुच्चमाणअप्पाबहुअस्स साहणो इदि कट्टु भागाभागो परूविदो । एदेसिं पच्छा अप्पा-बहुगाणुगमो परूविदो, सव्वाणिओगद्दारेसु पडिबध्दत्तादो ˩

ʿणाणाजीवेहि काल-भंगविचयाणं को विसेसो ? ण, णाणाजीवेहि भंगविचयस्स˩

<है, इस तथा मार्गणास्थानके प्रवाहका एक भेद सादि सान्त है, ऐसा सामान्यरूपसे जान लेनेपर शेष अनुयोगद्वारोंका अवतार संभव है। द्रव्यप्रमाणके जाने बिना क्षेत्रादि शेष अनुयोगद्वारोंके जाननेका उपाय नहीं, इसलियें द्रव्यानुयोगद्वारका उनसे पहले स्थापन किया गया है। फिर उनमें भी वर्तमान स्पर्शन प्ररूपणाके बिना अतीत और वर्तमान स्पर्शनके प्ररूपक स्पर्शनानुयोग-द्वारके जाननेका उपाय नहीं, इसलिये क्षेत्रानुयोगद्वारका पहले निवेश किया । मार्गणाओंसम्बन्धी निवासक्षेत्रको जान लेने पर और उनके द्रव्यप्रमाणका भी ज्ञान हो जाने पर पश्चात् अतीतकाल-सम्बन्धी स्पर्शनप्ररूपणा न्यायागत है इसलिये उसे पहले रखा गया। मार्गणासम्बन्धी कालका जब तक ज्ञान न हो जाय तब तक उनकी अन्तरप्ररूपणा नहीं बनती अत: उससे पूर्व काला-नुयोगद्वारका प्ररूपण किया गया। काल अन्तरकी योनी है ऐसा जानकर कालके अनन्तर अन्तरानुयोगद्वार प्ररूपित किया गया। आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वका साधन होनेसे पहले भागाभाग प्ररूपित किया गया। और इन सबके पश्चात् अल्पबहुत्वानुगम प्ररूपित किया गया। क्योंकि वह पूर्ववर्ती सभी अनुयोगद्वारोंसे सम्बध्द है।>

ʿशंका-˩<नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय इन दोनोंमें क्या भेद है।>

ʿसमाधान-˩<नहीं, क्योंकि नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय नामक अनुयोगद्वार मार्गणा->

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿमग्गणाणं विच्छेदाविच्छेदत्यितपरूवयस्स मग्गणकालंतरेहि सह एयत्तविरोहादो˩

ʿएयजीवेण सामित्तं ।। ३ ।˩

ʿजहा उद्देसो तहा णिद्देसो त्ति णायाणुसरणट्ठमेगजीवेण सामित्तं भणिस्सामो इदि वुत्तं ˩

ʽगदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरईओ णाम कधं भवदि ? ।।४।ʼ

ʽएदं पुच्छासुत्तं किण्णिबंधणं ? णयसमूहणिबंधणं । जदि एक्को चेव णयो होज्ज तो संदेहो वि ण उप्पज्जेज्ज। किंतु णया बहुआ अत्थि । तेण संदेहो समुप्पज्जदे कस्स णयस्स विसयमस्सिदूण ट्ठिदणेरईओ एत्थ पडिग्गहिदो त्ति । णयाणमभिप्पाओ एत्थ उच्चदे । तं जहा--ʼ

<कंपि णरं दट्ठूण य पावजणसमागमं करेमाण।>

<णेगमणएण भण्णइ णेरइओ एस पुरिसो त्ति ।।१।।>

<ओंके विच्छेद और अविच्छेदके अस्तित्वका प्ररूपक है, अत: उसका मार्गणाओंके काल और अन्तर बतलानेवाले अनुयोगद्वारोंके साथ एकत्व माननेमें विरोध आता है।>

ʽएक जीवकी अपेक्षा स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है ।।३।ʼ

<जैसा उद्देश होता है उसीके अनुसार निर्देश किया जाता है इस न्यायका अनुसरण करनेकेलिये एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्वका वर्णन करेंगे ऐसा प्रस्तुत सूत्रमें कहा गया है।>

ʽगतिमार्गणानुसार नरकगतिमें नारकी जीव किस कारणसे है।।४।ʼ

ʽशंका--ʼ<यह प्रश्नात्मक सूत्र किस आधारसे रचा गया है ? >

ʽसमाधान--ʼ<यह प्रश्नात्मक सूत्र नयसमहकेआधारसे रचा गया है। यदि एक ही नय होता तो कोई सन्देह भी उत्पन्न नहीं होता। किन्तु नय अनेक हैं इसलिये सन्देह उत्पन्न होता है कि किस नयके विषयका आश्रय लेकर स्थित नारकी जीवका यहां ग्रहण किया गया हैं । यहांपर नयोंका अभिप्राय बतलाते हैं । वह इस प्रकार है- >

<किसी मनुष्यको पापी लोगोंका समागम करते हुए देखकर नाम नयसे कहा जाता है कि यह पुरूष नारकी है।

(जब वह मनुष्य प्राणिवध करनेका विचार कर सामग्रीका संग्रह करता है तब वह संग्रह नयसे नारकी कहा जाता है।)>

समित्ताणुगमे-णय-णिक्खेवादिपरूवणं

< ववहारस्स दु वयणं जइया कोदंड-कंडगयहत्थो।

भमइ मए मग्गंतो तइया सो होइ णेरइओ।।२ ।।

उज्जुमुदस्स दु वयणं जइआ इर ठाइदूण ठाणम्मि।

आहणदि मए पावो तइया सो होइ णेरइओ ।।३।।

सद्दणयस्स दु वयण जइया पाणेहि मोइदो जंतू ।

तइया सो णेरइओ हिंसाकम्मेण संजुत्तो।।४।।

वयणं तु समभिरूढं णारयकम्मस्स बंधगो जइया ।

तइया सो णेरइमो णारयकम्मेण संजुत्तो ।।५।।

णिरयगइं संपत्तो जइया अणुहवइ णारयं दुक्ख।

तइया सो णेरइओ एवंमूदो णओ भणदि।।६।। >

ʹएदं सव्वणयविसयं णेरइयसमूहं बुध्दीए काऊण णेरइओ णाम कधं होदि त्ति पुच्छा कदा।

ʹअधवा णाम-ट्ठवण-दव्व-भावभेएण णेरइया चउव्विहा होंति। णामणेरइयो णाम णेरइयसद्दो। सो एसो त्ति बुध्दीए अप्पिदस्स अप्पिदेण एयत्तं (१ अ.स. प्रत्यो: अप्पिदस्स एयत्तं, मु. प्रतौ अप्पिदस्स अपाप्पिदेण एयत्तं इतिपाठ: ।) काऊण

< व्यवहार नयका वचन इस प्रकार है--जब कोई मनुष्य हाथमें धनुष और बाण लिये मृगोंकी खोजमें भटकता फिरता है तब वह नारकी कहलाता है।२।। >

< ऋजुसूत्र नयका वचन इस प्रकार है--आखेटस्थानपर पापी मृगोंपर आघात करता है तब वह नारकी कहलाता है।।३।। >

< शब्द नयका वचन इस प्रकार है--जब जन्तु प्राणोंसे विमुक्त कर दिया जाय तभी वह आघात करनेवाला हिंसाकर्मसे संयुक्त मनुष्य नारकी कहा जाय ।।४।। >

< समाभिरूढ नय का वचन इस प्रकार है--जब मनुष्य नारक कर्मका बन्धक होकर नारक कर्मसे संयुक्त हो जाय तभी वह नारकी कहा जाय ।।५ ।। >

< जब वही मनुष्य नरक गतिको प्राप्त होकर नरकके दु:ख अनुभव करने लगता है तभी वह नारकी है, ऐसा एवंभूत नय कहता है। >

< इन समस्त नयोंके विषयभूत नारकीसमूहका विचार करके ही नारकी जीव किस प्रकार होता है यह प्रश्न किया गया है। >

< अथवा, नाम, स्थापना, द्रव्य और भावके भेदसे नारकी चार प्रकारके होते हैं । नाम-नारकी नारकी शब्दको ही कहते हैं । वह यह है ऐसा बुध्दिसे विवक्षित नारकीका विवक्षित वस्तुके साथ >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

‘सब्भावासब्भावसरूवेण ठविदं ठवणणेरइओ । णेरइयपाहुडजाणओ अणुवजुतो आगम-दव्वणेरइयो । अणागनदव्वणेरइओ तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तमेएण। जाणुगसरीर-भवियं गदं । तव्वदिरित्तणोआगमदव्वणेरइओ णाम दुविहो कम्म-णोकम्म भेएण । कम्मणेरइओ णाम णिरयगदिसहगदकम्मदव्वसमूहो । पास-पंजर-जंतादीणि (१ अ.स. प्रत्योः पंचरवंतादीणि इतिपाठः।) णोकम्मदव्वाणि णेरइयभावकारणाणि णोकम्मदव्वणेरइओ णाम। णेरइयपाहुसजाणओ उवजुत्तो आगमभावणेरइओ णाम । णिरयगदिणामाए उदएण णिरयभावमुवगदो णोआगमभावणेरइओ णामं । एदं णेरइयसमूहं बुध्दीए काऊण णेरइओ णाम कधं होदि त्ति पुच्छा कदा ’

‘अधवा णेरइओ (२ अ.प्रतौ णेरओ इति पाठः।) णाम किमोदइएण भावेण, किमुवसमिएण, किं खइएण, किं खओवसमिएण, किं पारिणामिएण भावेण होदि त्ति बुध्दीए काऊण णेरइओ णाम कधं होदि त्ति वुत्तं ’

‘एदस्स संदेहस्स णिराकरणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि-’

‘णिरयगदिणामाए उदएण ।।५।’

<एकत्व करके सभ्दाव और असभ्दाव स्वरूपसे स्थापित स्थापना नारकी कहलाता है । नारकीसम्बन्धी प्राभृतका जाननेवाला किन्तु उसमें अनुपयुक्त जीव आगम द्रव्य नारकी है। ज्ञायक शरीर, भव्य और तद्व्यतिरिक्तके भेदसे अनागम द्रव्य नारकी तीन प्रकारका है । ज्ञायकशरीर और द्रव्य ज्ञात हैं । कर्म और नोकर्मके भेदसे तदव्यतिरिक्त नो आगम द्रव्य नारकी दो प्रकारका है । नरकगति नामकर्मके साथ प्राप्त हुए कर्मद्रव्यसमूहको कर्मनारकी कहते हैं पाश, पंजर यंत्र आदि नोकर्मद्रव्य जो नारक भावकी उत्पत्तिमें कारणभूत होते हैं, वे नोकर्म द्रव्य नारकी हैं । नारकियों सम्बन्धी प्राभृतका जानकार और उसमें उपयोग रखनेवाला जीव आगम भाव

नारकी है। नरक-गति नामप्रकृतिके उदयसे नरकावस्थाको प्राप्त हुआ जीव नोआगम भाव नारकी है । इस नारकीसमूहका विचार करके नारकी जीव किस प्रकार होता है यह प्रश्न किया गया है। >

< अथवा, क्या नारकी औदायिक भावसे होता है, क्या औपशमिक भावसे, क्या क्षायिक भावसे, क्या क्षायोपशमिक भावसे, क्या परिणामिक भावसे होता है ? >

< इस सन्देहको दूर करनेके लिये आचार्य अगला सूत्र कहते हैं- >

ʿ नरकगति नामप्रकृतिके उदयसे जीव नारकी होता हैं ।।५।।

सामित्ताणुगमे गदिमग्गणा

ʿ एवंभूदणयविसएण ओदइणी णोआगम (१ मु. प्रतौ एवंभूदणयणित, ण त्रंआगम इति पाठः।) भावणिक्खेवेण णिरयगदिणामाए उदएण णेरइओ णाम भवदि।

ʿतिरिक्खगदीए तिरिक्खो णाम कंध भवदि ? ।।६।।

ʿएत्थ वि णए णिक्खेवे ओदइयादिपंचविहभावे च अस्सिदूण पुव्वं व संदेह-स्सुप्पत्ती परूवेदव्वा।

ʿतिरिक्खगदिणामाए उदएण ।।७।।

ʿतिरिक्खगदिणामकम्मोदएणुप्पण्णपज्जायपरिणदम्मि जीवे तिरिक्खाभिहाणवव-हार-पच्चयाणमुवलंभादो।

ʿमणुसगदीए मणुसो णाम कधं भवदि ? ।।८।।

ʿएत्थ वि पुव्वं व णय-णिक्खेवादीहि संदेहुप्पत्ती परूवेदव्वा।

ʿमणुसगदिणामाए उदएण।।९।।

ʿकुदो ? मणुसगदिणामकम्मोदयजणिदपज्जायपरिणयजीवम्मि मणुस्साहिहाणवव-

----

<एवंभूतनयके विषयरूप औदारिक नोआगमभावनिक्षेप की अपेक्षा नरकगति नाम-प्रकृतिके उदयसे जीव नारकी होता है ।>

ʿतिर्यचगतिमें जीव तिर्यच किस कारणसे होता है ? ।।६।।

<यहां भी नय, निक्षेप और औदायिकादि पांच प्रकारके भावोंके आश्रयसे पूर्वोक्त विधिसे संदेहकी उत्पत्तीका प्ररूपण करना चाहिए।>

ʿतिर्यंचगति नामप्रकृतिके उदयसे जीव तिर्यच होता है ।। ७ ।⁄

<क्योंकि, तिर्यंचगति नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुई पर्यायसे परिणत जीवके तिर्यंच संज्ञाका व्यवहार और ज्ञान पाया जाता है।>

ʿमनुष्यगतिमें जीव मनुष्य कैसे होता है ।। ८ ।⁄

<यहां भी पहलेके समान नय-निक्षेपादिरूपसे सन्देहकी उत्पत्तिका प्ररूपण करना चाहिये।>

ʿमनुष्यगति नामप्रकृतिके उदयसे जीव मनुष्य होता है ।। ९ ।⁄

<क्योंकि, मनुष्यगति नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुई पर्यायसे परिणत जीवके>

ʿहार-पच्चयाणमुवलंभा।⁄

ʿदेवगदीए देवो णाम कधं भवदि ? ।। १० ।⁄

ʿसुगममेदं ।⁄

ʿदेवगदिणामाए उदएण ।। ११ ।⁄

ʿकुदो? देवगदिणामकम्मोदयजणिदअणिनादिपज्जपरिणदजीपम्मि देवाहिहा-णववहार-पच्चयाणमुवलंभा। णिरय-तिरिक्ख-मणुस-देवगदिओ जदि केवलाओ उदय-मागच्छंति तो णिरयगदिउदएण णेरइओ, तिरिक्खगदिउदएण तिरिक्खो, मणुस्सगदि-उदएण मणुस्सो, देवगदिउदएण देवो त्ति वोत्तुं जुत्तं । किंतु अण्णाओ वि पयडीओ तत्थ उदयमागच्छंति, ताहि विणा णिरय-तिरिक्ख मणुस्स-देवगदिणामाणमुदयाणुवलं-भादो। तं जहा-⁄

ʿणेरइयाण पंच उदयट्ठाणाणि होंति एक्कवीस-पंचवीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणतीसं ति। २१ । २५। २७। २८। २९ । तत्थ इगवीसपयडिउदयट्ठाणं वुव्वदे। तं जहा-णिरयगदि-पचिंदियजादि-तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास णिरयगदि-

----

<मनुष्य संज्ञाका व्यवहार और ज्ञान पाया जाता है।>

‘देवगतिमें जीव देव कैसे होता है ? ।। १० ।’

<यह सूत्र सुगम है।>

‘देवगति नामप्रकृतिके उदयसे जीव देव होता है ।। ११ ।’

< क्योंकि देवगति नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुई अणिमादिक पर्यायसे परिणत जीवके देव संज्ञाका व्यवहार और ज्ञान पाया जाता है।>

< नरक, तिर्यंच मनुष्य और देव ये गतियां यदि केवल अपनी एक एक प्रकृति उदयमें आती हों तो नरकगतिके नारकी, तिर्यंचगतिके उदयसे तिर्यच, मनुष्यगतिके उदयसे मनुष्य और देवगतिके उदयसे देव होता है. ऐसा कहना उचित है। किन्तु अन्य प्रकृतियां भी वहां उदयमें आती हैं जिनके विना नरक, तिर्यच, मनुष्य और देवगति नामकर्मोंका उदय पाया नहीं जाता ? वह इस प्रकार है- >

< नारकी जीवोंके पांच उदयस्थान हैं----इक्कीस, पच्चीस, सत्ताईस, अठ्ठाईस और उनतीस प्रकृतियों सम्बन्धी २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । इनमें इक्कीस प्रकृतियोंके उदयस्थानको कहते हैं । वह इस प्रकार है- >

< नरकगति [१], पंचेन्द्रियजाति [२], तैजस [३], और कार्मण शरीर [४], वर्ण [५], गन्ध [६], रस [७], >

सामित्ताणुगमे उदयट्ठाणपरूवणा

‘पाओग्गाणुपुव्वि-अगुरूअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर--सुभासुभ-दुभग-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णिमिणाणि त्ति एत्तियाओ पयडीओ घेत्तूण इगिवीसाए ठाणं होदि (१ णामधुवोदयबारस गइ-जाईणं च तसतिजुम्माण । सुभगदिज्जजसाणं जुम्मेक्कं विग्गहे वाणू । गो.क. ५८८.) । एत्थ भंगो एक्को चेव १ । एदमुदयट्ठाणं कस्स होदि ? विग्गहगदीए वट्टमाणस्स णेरइयस्स । तं केवचिरं कालं होदि ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया (२ अ.स. प्रत्यो: गदी वट्टमाणस्स इति पाठः ।)’

‘तत्थ इमं पणुवीसाए ट्ठाणं । एदाओ चेव पयडीओ । णवरि आणुपुव्वीमवणेदूण वेउव्वियसरीर हुंडसंठाण-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-उवघाद-पत्तेयसरीराणि पुव्वुत्तपयडीसु पक्खित्ते पणुवीसण्हं ठाणं होदि (३ विग्गहकम्मसरीरे सरीरसिस्से सरीरपज्जते। आणा-वचिपज्जत्ते कमेण

पंचोदये काला ।। एक्कं व दो व तिण्णि व समया अंतोमुहुत्तयं तिसु वि। हेट्ठिमकालूणाओ चरिमस्स य उदयकालो दु।। गो.क. ५८३-५८४.)। तं कस्स ? सरीरंगहिदणेरइयस्स । तं केवचिरं

<स्पर्श [८], नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी [९], अगुरूलघुक [१०], त्रस [११], बादर [१२], पर्याप्त [१३], स्थिर [१४], और अस्थिर [१५], शुभ [१६], और अशुभ [१७], दुभंग [१८], अनादेय [१९], अयशकीर्ति [२०], और निर्माण [२१], प्रकृतियोंको लेकर इक्कीस प्रकृतियोंसंम्बन्धी पहला उदयस्थान होता है। यहां भंग एक ही (१) हुआ। >

ʿशंका--<यह इक्कीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किसकेहोता है ?>

ʿसमाधान--<विग्रहगतिमें विद्यमान नारकी जीवके यह इक्कीस प्रकृतियोंवाला उदय-स्थान होता है।>

ʿशंका--<यह उदयस्थान कितने काल तक रहता है ? >

ʿसमाधान--<यह उदयस्थान कमसे कम एक समय और अधिकसे अधिक दो समय तक रहता है।>

< उन नारकियोंका यह पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान है, उस स्थानमें यहीं प्रकृतियां है। इतनी विशेषता है कि पूर्वोक्त इक्कीस प्रकृतियोंमेंसे नरकगतिआनुपूर्वीको छोडकर वैक्रियिकशरीराङ्गोपाङ्ग, उपघात और प्रत्येकशरीर इन पांच प्रकृतियोंको मिला देनेसे पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है। >

ʿशंका--<यह पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किसकेहोता है।>

ʿसमाधान-<जिस नारकी जीवने शरीर ग्रहणकर लिया है उसके यह पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है। >

ʿशंका--<यह उदयस्थान कितने काल तक रहता है ?>

ʿकालं होदि ? सरीरंगहिदपढसमयमादिं कादूण जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविद-चरिमसमओ त्ति. अंतोमुहुत्तमिदि वुत्तं होदि। भंगा वि पुव्विलभंगेण सह दोण्णि २।

ʿपरघादमप्पसत्थविहायगदिं च पुव्विल्लपणुवीसपयडीसु पक्खित्ते सत्तावीस-पयडीणमुदयट्ठाणं होदि। तं कम्हि होदि ? सरीरपज्जत्तीणिव्वत्तिपदपढमसमयमादिं कादूण जाव आणापाणपज्जत्तिअणिल्लोविदचरिमसमओ त्ति एदम्हि काले होदि। तं केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एत्थ भंगसमासो तिण्णि ३.।

ʿपुव्विल्लसत्तावीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते अट्ठावीसपयडीणमुदयट्ठाणं होदि। तं कम्हि होदि? ʿआणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव भात्ता-पज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्हि ट्ठाणं होदि। तं केवचिर ? जहण्णुक्क--

----

ʿसमाधान--<शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लेकर शरीरपर्याप्ति अपूर्ण रहनेके अन्तिम समय पर्यत अर्थात् अन्तर्मुहूर्त काल तक यह उदयस्थान रहता है यह पूर्वोक्त कथनका तात्पर्य है। >

< पूर्वोक्त एक भंगके साथ अब दो भंग (२) हो गये । >

< पूर्वोक्त पच्चीस प्रकृतियोंमें परघात तथा अप्रशस्तविहायोगति मिला देनेपर सत्ताईस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है। >

ʿशंका--< यह सत्ताईस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस कालमें होता हैं ? >

ʿसमाधान--< शरीरपर्याप्ति रचित होजानेके प्रथम समयसे लेकर आनप्राणपर्याप्ति अपूर्ण रहनेके अन्तिम समय पर्यन्त इस कालमें यह सत्ताईस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है। >

ʿशंका--< वह कितने काल तक होता है ? >

ʿसमाधान--< जघन्य और उत्कृष्ट रूपसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है। >

< यहां तकके सब भंगोका जोड तीन (३) हुआ। >

< पूर्वोक्त सत्ताईस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासको मिला देनेपर अट्ठाईस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है। >

ʿशंका--< यह अट्ठाईस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस कालमें होता है ? >

ʿसमाधान--< आनप्राणपर्याप्तिके पूर्ण होजानेके प्रथम समयसे लेकर भाषापर्याप्ति अपूर्ण रहनेके अन्तिम समय तक इस कालमें होता है ? >

ʿशंका--< वह कितने काल तक होता है ? >

ʿसमाधान--<जघन्य और उत्कृष्ट रूपसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है ।>

< १ मु. प्रतौ णिण्णत्तिषऽण इति पाठः ।>

सामित्ताणुगमे उदयट्ठाणपरूवणा

ʿस्सेण अंतोमुहुत्तं । एत्थ भंगसमासो चत्तारि ४ ।

ʿपुव्विल्लअट्ठावीसपयडीसु दुस्सरे पक्खित्ते एगूणत्तीसपयडीणमुदयट्ठाणं होदि। तं कम्हि ? भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स पढमसमयमादिं कादूण जाव अप्पप्पणो आउअट्ठिदीए चरिमसमओ त्ति एदम्हि अध्दाणे होदि। तं केवचिर ? जहण्णेण दसवस्ससहस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणतेत्तीससागरोवमाणि। एत्थ भंगसमासो पंच ५।

ʿतिरिक्खगदीए एक्कवीस-चदुवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूण-त्तीस-तीस-एक्कत्तीस त्ति णव उदयट्ठाणाणि । २१ । २४। २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । संपदि सामण्णेण एइंदियाणं एक्कवीस-चउवीस-पंचवीस-छव्वीस-सत्तावीस-त्ति पंच उदयट्ठाणाणि। आदावुज्जोवाणमणुदएण एइंदियस्स सत्तावीसट्ठाणेण विणा चत्तारि उदयट्ठाणाणि । आदावज्जोवाण उदएण सहिदएइंदियस्स पणुवीसट्ठाणेण विणा

< यहां तकके सब भंगोका जोड चार (४) हुआ ।>

< पूर्वोक्त अट्ठाईस प्रकृतियोंमें दुस्वरको मिला देनेपर उनतीन प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है। >

ʿशंका--< वह उनतीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस स्थान होता है ? >

समाधान--भाषापर्याप्ति पूर्ण करनेवालेके प्रथम समयसे लेकर अपनी अपनी आयु-स्थितिके अन्तिम समय पर्यन्त < इस स्थानमें वह उनतीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है। >

ʿशंका--< वह कितने काल तक होता है ? >

ʿसमाधान--<जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त कम दश हजार वर्ष और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपमप्रमाण होता है।>

<यहां तक सब भंगोंका योग पांच (५) हुआ ।>

<तिर्यचगतिमें इक्कीस, चौवीस, पच्चीस, छव्वीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस ये नौ उदयस्थान होते हैं । २१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । अब सामान्यत: एकेन्द्रिय जीवोंके इक्कीस, चौवीस, पच्चीस, छव्वीस, और सत्ताईस ये पांच उदयस्थान होते हैं । आतप और उद्योत इन दो प्रकृतियोंके उदयके बिना एकेन्द्रिय जीवके सत्ताईस प्रकृतियोंवाले स्थानसे रहित शेष चार उदयस्थान होते हैं । आतप और उद्योतके उदय सहित एकेन्द्रिय जीवके पच्चीस प्रकृतियोंवाले स्थानसे रहित शेष चार उदयस्थान >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

‘चत्तारि उदयट्ठाणाणि होंति ।’

‘तत्थ आदावुज्जोवुदयविरहिदएइंदियस्स भण्णमाणे तिरिक्खगदी-एइंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण:-गंध-रस-फास-तिरिक्खगदिपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरूगलहुअ थावर-बादर-सुहुमाणमेक्कदरं पज्जत्तापज्जत्ताणमेक्कदरं थिराथिरं सुभासुभं दुब्भगं अणादेज्जं जस-अजसकित्तीणमेक्कदरं णिमिणमिदि एदासिं एक्कवीसपयडीण उदओ विग्गहगदीए वट्टमाणस्स एइदियस्स होदि । केवचिरं ? जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया । एत्थ अक्खपरावत्तं काऊण भंगा उप्पाएदव्वा। तत्थ अजसकित्तिउदएण चतारि भंगा। जसकित्तिउदएण एक्को चेव । कुदो ? सुहुम अपज्जत्तेहि सह जसकित्तीए उदयाभावा, जसगित्तीए सह सुहुम-अपज्जताणं उदयाभावादो वा । तेणेत्थ भंगा पंचेव होंति (१ तत्वासत्याणारय-साहारण-सुहुमये अपुण्णे य । सेसंग-विगलऽसण्णीजुदठाणे जसजुगे भंगा ।। मो.क. ६००.) । ५।’

‘पुव्विल्लएक्कवीसपयडीसु आणुपुव्वीमदणेदूण ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाद पत्तेय-साधारणसरीराणमेक्कदरं पक्खिते चदुवीसपयडीणं उदयट्ठाणं होदि । तं कम्हिहोदि ?’

< होते हैं । उनमें आतप और उद्योतसे रहित एकेन्द्रिय जीवके उदयस्थान कहने पर- >

< तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, तैजस, और कार्मण शरीर, वर्ण, गंध रस, स्पर्श, तिर्यचगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरूलघुक, स्थावर, बादर और सूक्ष्म इन दोनोमेंसे कोई एक, पर्याप्त और अपर्याप्तमेसे कोई एक, स्थिर, और अस्थिर, शुभ, और अशुभ दुर्भग, अनादेय, यशकीर्ति

और अपयशकीर्तिमेंसे कोई एक, और निर्माण, इन इक्कीस प्रकृतियोंका उदय विग्रहगतिमें वर्तमान एकेन्द्रिय जीवकेहोता है। >

ʿशंका-ऱ< यह इक्कीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान कितने काल तक रहता है ? >

ʿसमाधान-ऱ<जघन्यत: एक समय और उत्कृष्टसे तीन समय तक यह उदयस्थान रहता है।>

< यहां अक्षपरावर्तन करके भंग निकालना चाहिये । उनमें अयशकीर्तिके उदयके साथ (बादर-सूक्ष्म और पर्याप्त-अपर्याप्तके विकल्पसे) चार भंग होते हैं। यशकीर्तिके उदयके साथ एक ही भंग होता है क्योंकि, सूक्ष्म और अपर्याप्तके साथ यशकीर्तिके उदयका अभाव है, अथवा क्यों कहो कि यशकीर्तिके साथ सूक्ष्म और अपर्याप्त प्रकृतियोंका उदय नहीं होता । इस कारण इस उदयस्थानमें पांच ही ५) भंग होते हैं । >

< पूर्वोक्त इक्कीस प्रकृतियोंमेसे आनुपूर्वीको छोडकर औदारिकशरीर, हुंडसंस्थान, उपघात, तथा प्रत्येक और साधारण शरीरोंमेसे कोई एक इन चारको मिला देनेपर चौवीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान हो जाता है। >

ʿशंका-ऱ< यह चौवीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस स्थानमें होंता है ? >

सामित्ताणुगमे उदयट्ठाणपरूवणा

ʿगहिदसरीरपढमसमयप्पहुडि जाव सरीरपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्हि ट्ठाणं (१ मिस्सम्मि तिअंगाणं संठाणाणं च एनदरगं तु । पत्तेयदुगाणेक्को उवचादो होदि उदयवदो।। गो.क. ५८९.)। केवचिरं ? जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एत्थ अजसगित्तीए उदएण अट्ठ भंगा। जसकित्तीए उदएण एक्को चेव । कुदो ? जसकित्तीए सह सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं उदयाभावा । तेण सव्वभंगसमासो णव ९ ⅃

ʿपुणो पज्जतमवणिय सेसचउवीसपयडीसु परघादे पक्खित्ते पंचवीसपयडीण-मुदयट्ठाणं होदि। एत्थ भंगा अजसकित्तीउदएण चत्तारि। कुदो ? अपज्जत्तउदयस्स अभावादो । जसकित्तिउदएण एक्को चेव । तेण सव्व भंगसमासो (२. तेण भंगसमासो इति पाठः।) पंच ५। तं कम्हि ? सरीरपज्जत्तयदपढमसमयमादिं कादूण जाव आणापाणपज्जत्तीए अणिल्लेविदचरिमसमओ त्ति एदम्हि ट्ठाणे । तं केवचिरं ? जहण्णुक्करंसेण अंतोमुहुत्तं ⅃

ʿसमाधान--< शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लेकर शरीरपर्याप्ति अपूर्ण रहनेके अन्तिम समय तकके स्थानमें यह उदयस्थान होता है। >

ʿशंका--< यह उदयस्थान कितने काल तक होता है ? >

ʿसमाधान--< जघन्य और उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है। >

< यहां अयशकीर्तिके उदयसहित (बादर सूक्ष्म, पर्याप्त-अपर्याप्त और प्रत्येकसाधारणके विकल्पसे) आठ भंग होते हैं । यशकीर्तिके उदयसहित एक ही भग हैं । क्योंकि, यशकीर्तिके साथ सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इन प्रकृतियोंका उदय नहीं होता । इस प्रकार इस स्थानमें सब भंगोका योग नौ (९) हुआ। >

< पूर्वोक्त उदयस्थानकी प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको छोडकर शेष चौवीस प्रकृतियोंमें परवातका मिला देने पर पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता हैं । यहांपर अयशकीर्तिके उदयके साथ (बादर-सूक्ष्म-और प्रत्येक-साधारणके विकल्पसे) चार होते हैं, क्योंकि, यहां-पर अपर्याप्तका उदय नहीं होता। यशकीर्तिके उदयसहित पूर्ववत् एक ही भंग होता है। इससे भंगोंका योग पांच (५) हुआ। >

ʿशंका--< यह पच्चीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस स्थानमें होता है ? >

ʿसमाधान--< शरीरपर्याप्ति पूर्ण होनेके प्रथम समयसे लेकर आनप्राणपर्याप्ति अपूर्ण रहनेके अन्तिम समय तकके स्थानमें यह उदयस्थान होता है। >

ʿशंका--< यह उदयस्थान कितने काल तक होता है। >

ʿसमाधान--< जघन्य और उत्कृष्टसे इस उदयस्थानका अन्तर्मुहूर्त काल है। >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿतस्सेव आणापाणपज्जतोए पज्जत्तयदस्स पुव्विल्लपंचवीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते छव्वीसपयडीणमुदयट्ठाणं होदि। त कस्स ? आणापाणपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स । केव्चिर ? जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तूणबावीसवरस्स-सहस्साणि । एत्थ भंगा पुव्वं व पंचेव होंति ५।ॽ

ʿआदावुज्जोवुदयसहिदएइंदियस्स वुच्चदे--एक्कवीस-चदुवीसपयडिउदयट्ठाणाणं पुव्वं व परूवणा कादव्वा। णवरि दोण्हं पि उदयट्ठाणाणं जसकित्ति-अजस-कित्तिउदएण दोण्णि दोण्णि चेव भंगा होंति। कुदो ? आदावुज्जोवुदय-भावीणं सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणं उदयाभावा । पुणो एदे पुव्वुत्तएक्कवीस-चउवीसपयडिउदयट्ठाणाणं भंगेसु लध्दा त्ति अवणेदव्वा। पुणो सरीरपज्जत्तीए पज्जत्त-यदस्स परघादे आदावुज्जोवाणामेक्कदरं च पुव्विल्लचदुवीसपयडीसु पक्खित्ते पणुवीस-